



कहानी



गीता शर्मा

वे लोग ओपन मैरिज में हैं, जानते हैं न आप ओपन मैरिज, माने आजाद पंखी की तरह कहीं भी उड़ो अपनी मर्जी से किसी भी डाल पर उतर जाओ और फिर वापिस अपने घोंसले में आ जाओ... घोंसला जिसे वो लोग शादी मानते हैं.

अरहान और परिणीति के बीच अलिखित समझौता था कि कहीं भी उड़ो पर लौट कर घर ही आना है...

जैसे उड़ी जहाज का पंखी उड़ी जहाज पर आवे, अरहान ने हंसते हुए कहा 'आखिरकार पंखिरी अरिण के सामने फेरे लिए हैं हममें, यह बोली, 'वैसे भी सब लोग हमें आइडियल कपल कहते हैं.' आज के समय में 'मैरिज इन जॉन्ट ए कनकाइनमेंट...आजीवन कैद...' वे कहते हुए ठहाका लगाते.

अरहान मर्चेंट नेवी में है. एक बार शिप पर जाता है तो छे सात महीने बाद ही लौटता है. उसके पीछे परिणीति पाटीं परिदा बन अपनी जिंदगी खुलकर जीती है. अरहान को शिप पर गए कई महीने हो गए हैं लेकिन परिणीति ने उसकी कोई खास कमी महसूस नहीं की. करती भी क्यों? जब कई विकल्प खुले हों... और हो भी क्यों ना? वो है ही इतनी स्मार्ट और फिट... उसका फिगर किसी नवयुवती की सी लचक और कामुकता से भरा हुआ है. जो देखता बस देखता रह जाता. वो भी अपनी सुन्दरता शोषो से ज्यादा मर्दों की आंखों में देखती. अपने पीछे पागल होते मर्दों की आंखों से टपकती लार देखने का नशा सा हो चला है उसे.

अरहान को शिप पर गए कई महीने हो गए हैं और परिणीति को उसके आने का कोई इंतजार नहीं है. वह अपनी दुनिया में मगन है क्योंकि इस बार मामला थोड़ा अलग है. कोई देह को पार करके दिल पे दस्तक दे रहा है... वह दिल दे बैठी है इंड्रेश को... शहर का नामी गिरामी बिजनेसमैन उसके प्यार में पागल जो हो गया है. इन दिनों रोमांस हवाओं में घुल रहा है. दोनों की शामें सिंदूरी हो चली हैं.

एक दिन परिणीति ने इंड्रेश के पर्स से उसकी पत्नी का गिरा फोटो उठाकर देखा तो देखती रह गई. वह ऊपर से लेकर नीचे तक महनों में जड़ी देवी प्रिन्सिमा का पोस्टर लग रही थी. उसकी नजर उसके मंगलसूत्र पर अटक कर रह गई, जिसके बीचोबीच एक बड़ा सा हीरा दमक रहा था.

ओपन मैरिज

'मैं कल शहर से बाहर जा रहा हूँ.' पत्नी के गले में अपनी बाहें डालते हुए इंड्रेश ने बताया और फिर गले में पड़े मंगलसूत्र को देखकर कहा, 'इसे तो उतार दिया करो क्यों डाले रहती हो हर वकत...'

'हम्मम', मंगलसूत्र उतारकर एक ओर रखते हुए पत्नी ने कहा. 'इससे ज्यादा वह कुछ बोल ही नहीं पाई. अंतरंग क्षणों में उसके अधरों पर मौन जड़ दिया था. एक लंबे अंतराल के बाद मिले इस अहसास को वह जी लेना चाहती है. खुशनुमा रंग में रंगी सुबह रात की खुमारी में चढ़क रही है.

महीनों बाद अरहान घर लौटा तो परिणीति के चेहरे की चमक उसकी खुशी बयां कर रही थी. 'अरे वाह! बहुत खुश लग रही हो आजकल और फिर उसके गले में पड़े मंगलसूत्र को देख कर बोला, 'बहुत सुंदर लग रहा है ये!' मंगलसूत्र को अपने हाथ में झूलते हुए अरहान बोला, 'बहुत कीमती लग रहा है.'

'हम्मम' 'पर ये तुम्हारा तो नहीं है? और तुम्हारा मंगलसूत्र कहाँ है?' 'वो टूट गया था... पुराना भी हो गया था तो बदल लिया... 'टूट गया कैसे...? बदल लिया क्यों?'

'पता नहीं... अरे... तुम इतने दकियानुसी कब से हो गए? सुनो अभी मुझे कहीं जाना है... बाद में बात करते हैं, ' कहते हुए निकल गई. अरहान को परिणीति का रवैया बुरा भी लगा और अजीब भी... जब से वह लौटा है वह नोटिस कर रहा है कि इन दिनों वह बदली बदली सी है. जैसे उसका आना उसे अच्छा नहीं लग रहा बल्कि अखर रह है. उसका खिला हुआ चेहरा महीनों बाद घर लौटते पति के कारण नहीं है फिर

क्या बात होगी? कहीं वह सीमा तो नहीं लांच रही है, पर कोई सीमा तो निर्धारित ही नहीं है, क्या वह इस घोंसले से उड़ चुकी है?'

फोन की घंटी बजने से उसकी तंद्रा भंग हुई. दूसरी ओर एक महिला थी, जिसने बिना किसी भूमिका के प्रश्न दाम दिया.

'आपको पता है कि आपकी बीबी आपके पीछे क्या करती है? 'क्या मतलब?'

'वो मेरे पति पर डोरे डाल रही है उसे रोकिए...'

'देखिए मैं उसे नहीं कुछ कह पाऊंगा... आप अपने पति को कहिए... 'मर्द कभी मानते हैं उन्हें... पर औरत को तो अपने सम्मान की रक्षा करनी चाहिए न...'

मर्द से बराबरी करने का भला ये भी कोई तरीका हुआ. ये कैसी आधुनिकता है जिसमें सारी हदें लांच ली जाएं? क्या यही है स्त्री स्वातंत्र्य? 'फिर संयत होकर बोली, 'आप पति हैं आप रोक लगाइए, इतना अधिकार तो रखते हैं न आप अपनी पत्नी पर, उन्हें समझाइए नहीं तो वो घर टूट जायेंगे...'

'कोई घर नहीं टूटेगा आप निश्चित रहें... पर मैं उसे रोक नहीं क्योंकि मैं भी...'

'मतलब? ' क्या हम मिल सकते हैं? 'अरहान ने पूछा.

'हम्मम... आज ही मिलते हैं... मैं समय और स्थान आपको मैसेज कर दूंगी.'

'देखिए पत्नी जी... मैं महीनों अपनी पत्नी से दूर रहता हूँ... जो काम मुझे अपने लिए गलत नहीं लगता उसके लिए कैसे गलत हो सकता है? तो आप मुझे माफ करें और अपने पति को रोके यदि रोक सकें.'

'अरे उन्हें तो यह पता भी नहीं है कि मुझे सब पता है... लेकिन शायद आपको भी नहीं पता कि पानी सिंहर से ऊपर आ चुका है. 'पत्नी ने सिलसिलेवार तरीके



कविता अंतर्मन की सघन अनुभूति की अभिव्यक्ति



मीनाक्षी दुबे

कविता में शब्दों का इन्तमाल कृपणता से क्रिया जाना चाहिए. कविता में बुद्धि के बजाय भाव- तत्व प्रधान होते हैं. जितने हम अपने अंतर्स में उतरते हैं उतनी ही कविता गहरी होती जाती है. कविता उपदेश देती प्रतीत नहीं होनी चाहिए. ये बातें देवास के ईटी सभागार में आयोजित लिटरेचर क्लब की कविता केंद्रिंग गोष्ठी में हुई.



आयोजन

बात करते हैं तो सबसे पहले हमें भक्ति काल याद आता है, दोहे, चौपाय, छंद, सोरठा याद आते हैं यानी लयबद्धता हमें लुभाती है. लेकिन नई कविता में शाब्दिक लय के बजाय आंतरिक लय अधिक महत्वपूर्ण मानी गई है. शब्दों के दोहराव एवं लय के कारण मंचीय कविताएं जवान पर चढ़ जाती हैं वहीं नई कविता में शब्दों के दोहराव से बचा जाता है. कविता में रचनाकार, प्रतीक एवं बिंबों के माध्यम से अपने मनोभावों को सहजता है. जब ये मनोभाव कविता रूप में अपनी बात कहें और हर पाठक को लगे कि अरे, यह बात तो मेरी या मेरे आसपास की है तब वह कविता

बड़े फलक की हो जाती है. व्यक्ति से समाप्त तक का यह सफ़र कविता को अविस्मरणीय बना देता है. कविता रचनाकार को व्यंग्य करती है, आवेशित भी करती है. शब्द उसकी पकड़ में आने लगते हैं और उसी शब्द कविता के रूप में कागज़ पर उतरते हैं. कविता में संवेदना का भाव प्रबल होता है. कविता जितनी सहज होती है वह उतनी ही प्रभावी होती है. अपने जीवन अनुभव के साथ-साथ अपने आसपास का परिवेश एवं परिदृश्य भी कविता को प्रभावित करता है.

एक बार रचने के बाद रचना को बार-बार पढ़ कर देखना चाहिए. इसे कुछ दिन रखने के

बाद दोबारा पढ़ने पर हम खुद अपनी रचना की कमियां नजर आने लगती हैं और रचना को परिष्कृत करना आसान हो जाता है. इस तरह के रोचक संवादों से कविता की रचना प्रक्रिया को बहुत ही आसानी से समझा जा सका. तीनों शब्द शक्तियों अंधिधा, व्यंजना और लक्षण पर भी अच्छी चर्चा हुई.

इस गोष्ठी में मनीष वैद्य, मनीष शर्मा, सुधीर महाजन, शकुंतला दुबे, छाया कानूनगी, रश्मि शर्मा, कृपाली राणा, कुसुम वाग्दे, नीलम दुबे, सुमन कुमावत, हिमांशु कुमावत, उर्वशी उपाध्याय, बिंदु तिवारी, मीनाक्षी दुबे आदि उपस्थित थे.

लघुकथा



सुरेश सैनी

पति ने दुरदुराते हुए एकदम टीवी बंद कर दी- 'स्वला.'

'क्या हुआ?' अपने काम में लगी पत्नी बोली.

अरे! टीवी तो बिकाऊ मीडिया हो चुका है.

'क्या करेंगे आप. मेरा तो टीवी देखने का बिलकुल मन ही नहीं होता.'

'सही कहा मैं तो कभी-कभी यूँ खोल लेता हूँ.'

'अरे! हाँ, बाजार जाना है, परसों सोनू के स्कूल में सेंटा क्लॉज वाला कोई कंपीटिशन रखा गया है. कई दिन से ज़िद किता है कि सेंटा वाली ड्रेस चाहिए. 'चलो तैयार होता हूँ.'

'पर...'

'पर-वर क्या?'

'अरे! वह लोग, कल पूरे बाजार में नारे लगाते हुए हंगामा कर रहे थे, कह रहे थे, यह तमाशा हमारे धर्म के बिलकुल विपरीत है. कहीं सेंटा-टॉयज की ड्रेस लेने हम गए और वहाँ उन उन्मादी-फसादी लोगों ने हंगामा कर दिया तो?'

सोनू सेंटा क्लॉज बनेगा

तभी सोनू स्कूल से आ गया. फौरन वही रट लगा दी, 'बाजार चलो मम्मी ड्रेस लेनी है सेंटा वाली.'

छः साल के सोनू को गोदी में उठाकर लाइज्जत हुए पापा बोले 'आज जरूर चलेंगे बेटे.'

अब भय मिश्रित हर्ष से पत्नी, पति को एकटक देखने लगी. उसके माथे पर बल आ गया. चेहरे पर विषाद की रेखाएं उभरने लगीं.

'अरे! तुम काहे फालतू में चिंता करती हो? मैं इन नफरती चिंटुओं से कतई नहीं डरता?'

हो हो हा हा हा. 5

J.S. सोनू को पिता

खुशी से उछलने लगे. बाप बेटे की मस्ती का मंजर, वातावरण को खुशनुमा करने लगा.

पत्नी की आंखों में, बच्चों को हज़ार-हज़ार खुशियाँ बाँटता, सेंटा क्लॉज वाली छवि उभरने लगी.



यात्रा वृत्तान्त



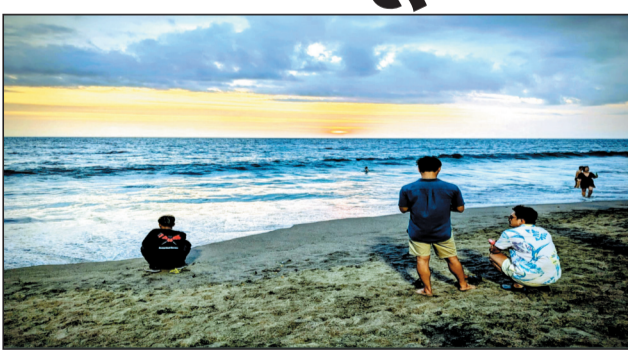
गोविन्द सेन

साल दो हजार तेईस के नवंबर की पच्चीस तारीख थी. मेरी नींद सुबह जल्दी खुल जाती है. सुबह घूमने की आदत है. विला मोरियाना में हम ठहरे हुए थे. इस विला में यह हमारी दूसरी रात थी. यहाँ रसोईघर था जिसमें मनवाहा भोजन पकाया जा सकता है. रसोई के तमाम बर्तन मौजूद थे. कैम्पु बाली के दक्षिण-पश्चिम में स्थित समुद्र तटीय गाँव है. यह विला इसी गाँव में स्थित था. इसका समुद्र तट दस किलोमीटर लम्बा है.

मैं चाय बनाकर पी चुका था. मेरे पास अब खाली समय था. मुझे बना दिया गया था कि समुद्र तट वहाँ से करीब एक-डेढ़ किलोमीटर ही है. सड़क भी सीधी थी. यह मेरे लिए अच्छा अवसर था. मैं अकेला पैदल ही ब्रावा बीच के लिए निकल पड़ा. सुबह नए इलाके में पैदल चलने का अपना अलग आनन्द होता है. नई-नई चीजें आपका ध्यान खींचती हैं. आप उन्हें देख रहते से भरते जाते हैं. ताज़ा हवा आपको ताज़गी का एहसास कराती है. रास्ते में पड़ने वाली एक चूड़ को देखते हुए चलते जाने का अनोखा सुख होता है. सभी

मौज-मस्ती में डूबा बाली का ब्रावा बीच

दुकानें अभी खुली नहीं थीं. लेकिन वाहनों का थोड़ा आवागमन शुरू हो गया था. मेरी दाहिनी ओर होटल, क्लब, रेस्टोरेंट अधिक थे. दाहिनी ओर ही ब्रावा बीच था. बोर्ड पर उनके ज्यादातर नाम और अन्य जानकारीयें सैलानियों की सुविधा के लिए रोमन लिपि में थे. वैसे यहाँ बालिनीज भाषा चलती है. मैंने यहाँ कई जगहों पर रोमन के साथ बालिनीज लिपि में भी लिखा हुआ देखा है. यह लिपि मुझे अनोखी लगी. कुछ-कुछ उर्दू तो कुछ-कुछ कन्नड़ जैसी. मानो दोनों लिपियों के अक्षरों का मिला दिया गया हो. कुछ वर्ण फोर्क (कॉटेदार चम्मच) में पॉसे सिवइयों जैसे लटके हुए. सर्पा जैसी कुंडलाकार अक्षरों में कई आकृतियाँ नजर आती हैं.



किप हुए स्कूटरों की लम्बी कतारें लगी हुई थीं. दलान की ओर गटर का पानी जा रहा था जो आगे मुहाने पर एक डबरे में समाता जा रहा था. आखिर में यह पानी समुद्र में जाकर मिल रहा था.

नीचे उतरते ही सामने ब्रावा बीच का नजारा था. विशाल नीला समुद्र लहरा रहा था. दूर तक रेतलीला तट फैला हुआ था. फेनिल लहरें तट को फूँकर लौट रही थीं. यह सिलसिला अनवरत चल रहा था. अद्भुत दृश्य था. पॉव रेत में धँसते जा रहे थे. यहाँ की रेत का रंग काला था. यह मेरे लिए अचरज था. बाली के ही अन्य तटों पर अब तक सफ़ेद रेत मिली थी. दरअसल ज्वालामुखीय प्रभाव से यह काली हो गई थी. मेरे जूतों में रेत घुसने लगी थी. मुझे जूते उतारकर हाथ में

लेने पड़े. रेत से मेरे पॉव लथपथ हो गए थे. बारीक रेत पॉव के पंजे पर चिपक गई थी. आते वक़्त एक स्थानीय कर्मचारी पाइप से सड़क को धो रहा था. मैंने पॉवों की ओर इशारा करते हुए पानी डालने का आग्रह किया.

उसने सहज ही मेरे पॉवों पर पानी डालकर उन्हें धुलवा दिया. अन्यथा मुझे जूते हाथों में लेकर ही जाना पड़ता. यदि जूते पहन लेता तो रेत चुभती रहती. सुबह 9:19 को निकला था. करीब डेढ़ घंटे में वापस विला लौट आया था. लंच के लिए हम 'लोला'स केटीना मैक्सिकाना नामक भोजनालय पैदल बाजार में घूमते हुए पहुँचे. यहाँ मैक्सिकन फूड था. इस भोजनालय का संचालन महिलाओं द्वारा ही किया जा रहा था. जिस महिला ने भोजन का ऑर्डर लिया वह गामा पहलवान-सी

बलिष्ठ लग रही थीं. अवि टमी पेन (पेट दर्द) की शिकायत कर रहा था. उसके लिए चावल और दही विला से ही लेकर चले थे. उसे बहला-फूसला कर वही खिलाया गया. भोजनालय के भीतर ही टैबल टेनिस का जालीदार दीवारों से घिरा कोर्ट था. इसमें लाल त्वा वाले दो पुरुष खेल रहे थे. ठक-ठक की आवाजें आ रही थी. एक सौवली महिला कुर्सी पर बैठी हुई थी. वह किसी बात पर खुलकर खूब खिलखिला रही थी. पुरुष मुस्कुरा रहे थे. शायद खेल-खेल में कोई मजदर बात हो गई थी.

अवि की तबीयत को देखते हुए वापसी में हम काले रंग की टैक्सी से विला आए. शाम को ब्रावा बीच पर सूर्यास्त देखा था. हम पॉवों बीच के लिए रवाना हो गए. अवि की हालत में भी कुछ सुधार था. दूर तक सैलानी फैले हुए थे. मोबाइल से फोटो खींच रहे थे. धूम रहे थे. लहरों के साथ खेल रहे थे. सभी मौज-मस्ती के मूड़ में थे. अवि के लिए सेंटा-टॉयज रखने पड़ते हैं. वह अपने साथ खिलौनों का एक बैग रखता ही है. वह रेत में खेलने लगा था. स्टार, मछली, फूल आदि के सॉवे से खेल चुका था. अब वह फावड़े से रेत को उलट-पलट रहा था. उसे मचाहा आकार दे रहा था. रेत से कुछ नया बनाया कर रहा था. उसने अपना एक पॉव रेत के भीतर धँसा

दिया था. खेल की तल्लीनता में वह टमी पेन भूल गया था. एक बच्ची समुद्र की लहरों के साथ प्लास्टिक की बोतलें इकट्ठा करने के लिए दौड़ रही थी. इस दृश्य को देखकर दुःख हुआ. उसके पढ़ने और खेलने के दिन थे. लेकिन उसे पेट भरने के लिए काम करना पड़ रहा था. मासूम बच्चे सबसे अधिक गरीबी के शिकार होते हैं. मुझे राजेश जोशी की कविता याद हो आई 'बच्चे काम पर जा रहे हैं/ हमारे समय की सबसे भयानक पवित्र है यह.' आगे वे लिखते हैं कि इस पवित्र को विवरण की तरह नहीं, सवाल की तरह लिखा जाना चाहिए.

समुद्र के ऊँचे किनारे पर स्थित कई रेस्टोरेंट, क्लब, होटल आदि थे जहाँ काफी हलचल हो रही थी. वे लाल-पीली-हरी-सफ़ेद कई तरह की रोशनी से जगमग थे. वहाँ से डीजे का तेज धमाकेदार संगीत उड़ रहा था जो समुद्र की लहरों के शोर को भी मात देने की कोशिश कर रहा था. उस रोशनी में सैलानी नाच-नाच कर पागल हुए जा रहे थे. शोर, संगीत और रोशनी एक-दूसरे के साथ गुथम-गुथम हो रहे थे. सूर्यास्त हो चुका था. अहिस्ता-आहिस्ता अंधेरा गाढ़ा होता जा रहा था. मन के तल पर थोड़ी उदासी पसर गई थी. मुझे बोलते-चुनती उस बच्ची का वह दृश्य परेशान कर रहा था.

क्लास by बड़े भाई

नए साल में छोड़िए यह तीन आदतें



संदीप द्विवेदी कवि, प्रेरक चक्रवात/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, यह साल बीतने में बस कुछ दिन शेष हैं. नया साल आने की तैयारी कर चुका है. यह साल जैसा भी रहा, अच्छा रहा. हमने आपने अच्छे बुरे अनुभव भी किए. सब किसी न किसी तरह हमारे भविष्य के लिए अनुभव बने. छोटे भाई, आज का यह लेख आपको नए साल की तैयारी के लिए है. छोटे भाई, कोई भी साल हमारी उम्र का एक हिस्सा भी अपने साथ ले जाता है. इसलिए आवश्यक है कि हम अपने समय को सही जगह खर्च करें. जिससे हम उन्नति करें. कुछ नया, कुछ बेहतर रचें. तो छोटे भाई इसके लिए हमें कुछ छोड़ना होगा. और आज मैं वो तीन आदतें हैं जो आप यदि छोड़ दें तो इससे बचा समय समय हमें कुछ बढ़ा दे सकता है और उन तीन आदतों में जो पहली आदत है वह है - अपनी दुनिया भर से तुलना करना. विचार करिए कितना ही समय हम यह सोच सोचकर गंवाते हैं कि बगल वालों के पास गाड़ी है. मेरे पास गाड़ी नहीं है. वो कहां से कहां पहुंच गया मैं वही रह गया या कुछ भी. हम तुलना करने लगते हैं जबकि हम सब अलग हैं सबकी अपनी दौड़ है. अपनी यात्रा है. यह सब सोचने के बजाय उस समय कुछ कर लिया जाए तो कितना कुछ हम हासिल कर लें. इसलिए किसी से तुलना नहीं करें. दूसरी आदत है - दिन भर अतीत में रहना. छोटे भाई, एक बात गंठान बांध लीजिए कि याद करेंगे तो बीता हुआ सुख भी तुम्हें दुःख ही देगा. इसलिए अतीत की गलतियाँ, भूलें दुःख सब याद करने में समय बेकार मत करिए. तीसरी आदत है - भविष्य की कल्पना. यह भी हमारा अच्छा खासा समय ले जाती है. भविष्य की कल्पना करना योजना बनाना कभी बुरा नहीं है लेकिन उसी में मगन हो जाना यह उचित नहीं है. चाहे वह अच्छी कल्पना हो या कुछ बुरा होने का डर. दोनों ही आती मात्रा में कहीं का नहीं छोड़ती और हम कुछ बढिया नहीं कर पाते. इसलिए यहां से भी अपने नया साल का समय बचाइए. तो यह तीन आदतें ध्यान रखकर अपने वर्तमान पर अपना समय लगाइए. अतीत से सीखिए और भविष्य की योजना बनाकर वर्तमान में जुट जाइए. आपके पास आज का ही समय है. इसमें ही सबका संतुलन बनाकर कुछ बढ़ा और बेहतर किया जा सकता है. तो चलिए, नए वर्ष के लिए अग्रिम शुभकामनाएं. अब नए वर्ष में मिलते हैं. आपके लिए कुछ नया लेकर. धन्यवाद.

तुम हो ही इतनी लापरवाही... अब भुगतो अपनी लापरवाही की सजा 'लापरवाही नहीं अटूट विश्वास... अब कोई अमानत में खयालत करे तो क्या कीजियेगा? जानते हैं ना आप कितना पुराना रिश्ता था. मैं आख बंद करके विश्वास करती थी... पर मेरी जरा सी लापरवाही ने नीयत बिगाड़ दी उसकी... पता नहीं क्या क्या चुराती रही होगी... मैं तो उसके पति को बहुत बुरा समझती थी कि उसका ठीक से ध्यान नहीं रखता... अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाता... तभी तो बेचारी को ये सब करना पड़ता है. पर ये तो अच्छा रहा कि उसके पति की निशानदेही पर पुलिस ने उससे सहने जवाब कर लिए... अब जेल की थकवियाँ पहनेगी.

'धोखा दे रही थी... तो अब सजा भुगतोगी, ' इंड्रेश ने ताव में आकर कहा 'और नहीं तो क्या... कुछ और चुराती तो माफ कर देती लेकिन उसने मेरे सुहाग पर हाथ डाला था तो कैसे माफ करती? 'अच्छा किया अब तो घर से निकाल दिया न उस कामवाली को 'हां... आपको तो निकाल नहीं सकती थीं... ' मुझे मैं बंद मंगलसूत्र को अपने गले में डालते हुए पद्मा ने इंड्रेश की चौंधियाई चोर निगाहों में झांकते हुए कहा.

कविता

कैनवास

खुशियाँ भी होती हैं छोट्टी-बड़ो सोचती हूँ जब तो स्कूल में बच्चों के साथ बीते पल घूमने लगते हैं आँखों के आगे



शिल्पी जैन

एक बच्चा मन के कैनवास पर उकेरता है फुटबॉल

अपने पसंदीदा रंगों से सजाता है उसे मन-मुताबिक और फिर सपनों में खो जाता है उससे खेलते हुए

चारों ओर तालियों का शोर दोस्त उसका नाम पुकारते हैं बार- बार पूरे जोश से

बॉल की तरह जाना चाहता है वो आसमाँ के करीब तक अपनी मुट्ठी में भर लेना चाहता है आकाश का नीलापन कि घर लौटकर माँ के हाथों में उसे रखकर बता सके अपनी उड़ान

लेकिन लंच की घंटी बजते ही उसे वहाँ छोड़ वह दौड़ जाता है प्लेट हाथों में थामे अपनी बारी के इंतज़ार में

रोटी की महक खींचती है उसे भूख मिट जाने की खुशी सबसे बड़ी है उसके लिए